हमें जग का कल्याण करना

हमारी यह जीवन अमूल्य

बाप का वरसा पाना तो

आत्मा भाई-भाई की दृष्टि रखो

स्त्री-पुरुष का भान निकालो

देह-अभिमान छोड़ देहि-अभिमानी बनना

आत्मा और शरीर दोनों को पावन बनाना

रूहानी सेवा से नर्कवासी को स्वर्गवासी बनाना

एक बाप दूसरा न कोई..स्मृति रहे

तब बन्धनमुक्त, योगयुक्त बने

पुराने चोले को छोड़ घर जाना

इसे टाडट ड्रेस, नही लूज़ रखना

मोटेपन की बीमारी से बचो

जब व्यर्थ का एकस्ट्रा भोजन छोड़ो

ओम शान्ति !!!

मेरा बाबा !!!